राजस्थान GK PDF
शानदार नोट्स फ्री PDF
राज्य में पशुधन
राजस्थान की सभी प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु
Download Link -- Click

नवीनतम राजस्थान GK
(टॉपिक वाइज नोट्स)
Free PDF
Click Here
RAJASTHAN CLASSES
राजस्थान क्लासेज
By - Aadarsh Sir

राजस्थान में पशुधन (Rajasthan mein Pashudhan)

गौवंश

(1) **गीर**

◆ **प्राप्ति क्षेत्र** – अजमेर, भीलवाड़ा, किशनगढ़, चित्तौड़गढ़, बूंदी

◆ **विशेषता** – मूल रूप से गुजरात के गिर वन में पाई जाने वाली यह नस्ल राजस्थान में रैंडा तथा अजमेर में अजमेरा नाम से जानी जाती है । यह द्विप्रयोजनीय नस्ल है । इस गाय के कान केले के पत्तों जैसे होते हैं । यह गाय अधिक दूध देने के लिए प्रसिद्ध है । इसके उपनाम – काठियावाड़ी , सूरती व डेक्कने है ।

(2) **थारपारकर**

◆ **प्राप्ति क्षेत्र** – जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, जालौर

◆ **विशेषता** – इस नस्ल का उत्पत्ति स्थल मालाणी प्रदेश (बाड़मेर) है । बैल कम परिश्रमी परंतु गायें अधिक दूध देने वाली होती है । यह गाय प्रतिदिन लगभग 11 से 14 लीटर दूध देती है । यह गाय मूलतः कराची (पाकिस्तान) के पास थारपारकर जिले की है । थारपारकर गाय गुजरात व राजस्थान में पाई जाती है , इसे उजली सिंधी कहते हैं ।

(3) नागौरी

◆ **प्राप्ति स्थल** – नागौर, जोधपुर जिले का उत्तरी पूर्वी भाग व नोखा (बीकानेर)

◆ **विशेषता** – इसकी उत्पत्ति स्थल नागौर जिले का सुहालक प्रदेश माना जाता है । नागौरी बेल दौड़ने में तेज, मजबूत, भार वाहन तथा कृषि कार्यों में उत्तम क्षमता वाला होता है । इस नस्ल रंग सफेद तथा भूरा होता है ।

(4) **राठी**

◆ **प्राप्ति क्षेत्र** – बीकानेर, श्रीगंगानगर, जैसलमेर व चुरू के कुछ भाग

◆ **विशेषता** – दूध उत्पादन की दृष्टि से श्रेष्ठ नस्ल । गाय की नस्ल "राजस्थान की कामधेनु" मानी जाती है । यह गाय लाल सिंधी व साहिवाल की मिश्रित नस्ल है ।

(5) कांकरेज

◆ **प्राप्ती स्थल** – बाड़मेर सांचौर व नेहड़ क्षेत्र (जालौर) व जोधपुर के कुछ भाग

◆ **विशेषता** – इसे सांचोरी नस्ल भी कहा जाता है । जालौर, सिरोही, पाली तथा बाड़मेर जिले में पाई जाने वाली भारत की सबसे भारी नस्ल है । इसका मूल स्थान गुजरात का कच्छ का रण है । यह बैल अधिक बोझा ढोने, कठोर भूमि को जोतने व तीव्र गति के लिए प्रसिद्ध है ।

(6) हरियाणवी

◆ **प्राप्ति क्षेत्र** – सीकर, झुंझुनू, जयपुर, गंगानगर, हनुमानगढ़ व चुरु

◆ **विशेषता** – इस नस्ल के गोवंश की मस्तिष्क के मध्य हड्डी उठी होती है। औसत 5 से 8 किलोग्राम दूध देती है। इसका मूल स्थान- रोहतक, हिसार व गुड़गांव है।

(8) **साँचोरी**

- **प्राप्ति क्षेत्र** – सांचौर, उदयपुर, पाली, सिरोही

(9) **मेवाती**

- **प्राप्ति क्षेत्र** – अलवर, भरतपुर

- **विशेषता** – इसे कोठी नस्ल भी कहा जाता है।

यह हल जोतने व बोझा ढोने हेतु उपयुक्त।

विदेशी नस्ल –

➡ **जर्सी** – मध्य एवं पूर्वी राजस्थान में पाई जाती है। इसकी उत्पत्ति अमेरिका में हुई। इसके दूध में वसा की मात्रा 4% होती है।

➡ **हॉलिस्टिन** – मध्य व पुर्वी राजस्थान में पाई जाती है। इसकी उत्पत्ति हॉलैण्ड तथा अमेरिका है। इसके शरीर पर काले सफेद चकत्ते होते हैं।

➡ **रेड डेन** – इसकी उत्पत्ति डेनमार्क में हुई।

भैंस

(1) जाफराबादी

- **प्राप्ति क्षेत्र** – राजस्थान के दक्षिणी भाग में

- **विशेषता** – इसका मूल निवास स्थान गुजरात का काठियावाड़ है । यह नस्ल ' श्रेष्ठ मादा जानवर का पुरस्कार" जीत चुकी है ।

(2) मुर्रा (खुंडी)

- **प्राप्ति क्षेत्र** – जयपुर, उदयपुर, अलवर, गंगानगर व भरतपुर

- **विशेषता** – यह मांटगुमरी/ मुल्तान (पाकिस्तान) की मूल नस्ल है । राज्य में सर्वाधिक भैंसे इस नस्ल की है । दूध उत्पादन की दृष्टि से श्रेष्ठ नस्ल । इस नस्ल की भैंस के दूध में वसा की मात्रा (7-8%) सर्वाधिक होती है । मुर्रा भैंस को देहली बफैलो कहते हैं ।

(3) **सूरती**

◆ **प्राप्ति क्षेत्र**– उदयपुर व उसके आसपास के दक्षिणी भाग में

◆ **विशेषता** – यह गुजरात की नस्ल है ।

(4) **मेहसाणा**

◆ **प्राप्ति क्षेत्र** – सिरोही व जालौर जिले में

◆ **विशेषता** – यह नस्ल मुर्रा और सूरती की नस्लों के संयोग से बनी है ।

➡ **अन्य नस्लें** – नागपुरी, बदावरी व रथ

भेंड़

(1) मालपुरी

प्राप्ति क्षेत्र – जयपुर, टोंक, सवाई माधोपुर, अजमेर, बूंदी ,भीलवाड़ा

विशेषता – इसे देशी नस्ल भी कहा जाता है । इसकी ऊन मोटी होने के कारण गलीचे के लिए उपयुक्त होती है ।

(2) **चोकला या शेखावाटी**

◆ **प्राप्ति क्षेत्र** – झुंझुनू, सीकर , चुरू , बीकानेर व जयपुर के कुछ भाग में

◆ **विशेषता** – यह छापरर तथा शेखावाटी नस्ल के नाम से भी जानी जाती है । यह रूस की नस्ल है । इसे "भारत की मेरिनो" भी कहा जाता है । यह सबसे उत्तम किस्म कि ऊन देने वाली नस्ल है ।

(3) **सोनाड़ी (चनोथर)**

◆ **प्राप्ति क्षेत्र** – उदयपुर, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ़, बांसवाड़ा व भीलवाड़ा

◆ **विशेषता** – यह द्वि-परियोजनीय नस्ल है । इस भेड़ का उपयोग मुख्य रूप से माँस प्राप्ति के लिए किया जाता है ।

(4) **नाली**

◆ **प्राप्ति क्षेत्र** – गंगानगर, झुंझुनू, सीकर, बीकानेर व चुरू

◆ **विशेषता** – इनकी ऊन मोटी,घनी एवं सफेद रेशे वाली होती है। यह अधिक ऊन के लिए प्रसिद्ध है। ऊन का रेशा 10 से 14 सेमी लंबा होता है।

(5) **पूगल**

◆ **प्राप्ति क्षेत्र** – जैसलमेर, नागौर व बीकानेर का पश्चिमी भाग

◆ **विशेषता** – इसकी उत्पत्ति स्थान बीकानेर की तहसील पूगल होने के कारण इसी के नाम से इस नस्ल का नाम पूगल हो गया। यह ऊन मध्यम श्रेणी की सफेद होती है।

(6) **मगरा**

◆ **प्राप्ति क्षेत्र** – बीकानेर, जैसलमेर व सीमावर्ती नागौर जिला

◆ **विशेषता** – इसकी ऊन मध्यम श्रेणी की होती है । इसे चकरी तथा बीकानेरी चोकला भी कहा जाता है ।

(7) **मारवाड़ी**

◆ **प्राप्ति क्षेत्र** – जोधपुर, बाड़मेर, नागौर, पाली, सिरोही

◆ **विशेषता** – राजस्थान की कुल भेड़ों में सर्वाधिक भेड़े मारवाड़ी नस्ल की है । इसमें रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है ।

(8) **जैसलमेरी**

◆ **प्राप्ति क्षेत्र** – जैसलमेर, जोधपुर व बाड़मेर का पश्चिमी भाग

◆ **विशेषता** – सबसे लंबी और सर्वाधिक दूध देने वाली नस्ल है । राजस्थान में सबसे ज्यादा ऊन इसी नस्ल से प्राप्त होती है । इसकी ऊन मोटी तथा लंबे रेशे वाली होती है । इस नस्ल की भेड़ों का मुंह काला तथा भूरा होता है ।

(9) **खेरी**

◆ **प्राप्ति क्षेत्र** – जोधपुर, पाली एवं नागौर

◆ **विशेषता** – ऊन गलीचे के लिए उपयुक्त ।

विदेशी नस्लें –

- **रूसी मेरिनो** – टोंक, जयपुर ,सीकर
- **डोर्सेट** – टोंक
- **रेम्बुले** – टोंक
- **कोरिडेल** – चित्तौड़गढ़

बकरियाँ

(1) **मारवाड़ी (लोही)**

◆ **प्राप्ति क्षेत्र** – उत्तरी पश्चिमी राजस्थान के मरुस्थल व अर्द्धमरूस्थलीय क्षेत्र

◆ **विशेषता** – राज्य की सबसे पुरानी नस्ल । दूध तथा मांस उत्पादन की दृष्टि से उत्तम नस्ल है ।

(2) **बारबरी**

◆ **प्राप्ति क्षेत्र** – अलवर, बांसवाड़ा, भरतपुर, करौली, सवाई माधोपुर, धौलपुर

◆ **विशेषता** – सर्वाधिक सुंदर नस्ल ।

(3) जखराना (अलवरी)

- **प्राप्ति क्षेत्र** – अलवर
- **विशेषता** – सर्वाधिक दूध देने वाली नस्ल ।

मूल स्थान- बहरोड (अलवर) ।

(4) सिरोही

- **प्राप्ति क्षेत्र** – सिरोही, जालौर, उदयपुर व अजमेर
- **विशेषता** – मांस के लिए उपयुक्त ।

(5) **शेखावाटी**

◆ **प्राप्ति क्षेत्र** – सीकर व झुंझुनूं

◆ **विशेषता** – बिना सींग वाली व अच्छा दूध देने वाली नस्ल । काजरी के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित ।

(6) **परबतसरी**

◆ **प्राप्ति क्षेत्र** – परबतसर, अजमेर, जयपुर, टोंक

◆ **विशेषता** – हरियाणा की बीछल व राजस्थान की सिरोही नस्ल का मिश्रण ।

(7) **जमुनापरी**

- **प्राप्ति क्षेत्र** – कोटा, बूंदी, झालावाड़

- **विशेषता** – दूध देने के लिए प्रसिद्ध बकरी की नस्ल , बहुप्रयोजनीय नस्ल है । यह भार ढोने,माँस तथा दूध के लिए उपयोगी है ।

ऊँट

(1) बीकानेरी

◆ **प्राप्ति क्षेत्र** – बीकानेर, नागौर, जोधपुर, चूरू, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़

◆ **विशेषता** – बोझा ढोने व हल जोतने हेतु प्रसिद्ध नस्ल ।

(2) **जैसलमेरी**

◆ **प्राप्ति क्षेत्र** – जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, बीकानेर का दक्षिणी भाग ।

◆ **विशेषता** – यह ऊंट सवारी एवं रेतीले भाग में दौड़ के लिए प्रसिद्ध है ।

➡ **अन्य नस्लें** – मारवाड़ी, जोधपुर, सिंधी, कच्छी, अलवरी ।

घोड़ा

(1) मालाणी

◆ **प्राप्ति क्षेत्र** – जोधपुर, जालौर, सिवाना (बाड़मेर)

◆ **विशेषता** – घोड़े की श्रेष्ठ नस्ल । काठियावाड़ी तथा सिंधी नस्ल के मिश्रण से उत्पन्न । घुड़दौड़ के लिए देश की उत्तम नस्लों में से एक ।

(2) मारवाड़ी

- **प्राप्ति क्षेत्र** – मारवाड़ क्षेत्र
- **विशेषता** – राजस्थान में सर्वाधिक अश्व इसी नस्ल के हैं ।

(3) काठियावाड़ी

- **प्राप्ति क्षेत्र** – गुजरात से लगे हुए राज्य के क्षेत्र
- **विशेषता** – इस नस्ल के घोड़े सुंदर, मजबूत कद- काठी तथा दौड़ने के लिए उत्तम होते हैं । इस नस्ल का सिर अरबी घोड़े से मिलता है ।

सुअर

◆ भारत में सर्वाधिक सूअर उत्तर प्रदेश में है ।

◆ राजस्थान में सर्वाधिक सुअर जयपुर तथा सबसे कम बांसवाड़ा में है ।

◆ अलवर में लार्ज व्हाइट योर्कशायर सुअर पाले जाते हैं ।

कुक्कुट /मुर्गी

◆ उन्नत नस्ल की सर्वाधिक मुर्गियां अजमेर, उदयपुर, भीलवाड़ा एवं जयपुर में पाई जाती है ।

◆ राजस्थान में पाई जाने वाली विदेशी नस्ल की मुर्गीयाँ असील व सफेद लेग हॉर्न है ।

◆ राजस्थान में पाई जाने वाली मुर्गी की देसी नस्लें ट्रैनी व बरसा है ।

◆ देसी नस्ल की सर्वाधिक मुर्गियां बांसवाड़ा में पाई जाती है ।

◆ संकर नस्ल की मुर्गियाँ सर्वाधिक अजमेर में पाई जाती है ।

◆ देसी नस्ल की सर्वाधिक मुर्गियां बांसवाड़ा में पाई जाती है ।

◆ संकर नस्ल की मुर्गियाँ सर्वाधिक अजमेर में पाई जाती है ।

◆ अजमेर को राजस्थान का अंडे की टोकरी के नाम से जाना जाता है ।

◆ बर्ड फ्लू मुर्गियों में होने वाला रोग है ।

◆ रानीखेत मुर्गियों का रोग है ।

◆ मुर्गी की नसबंदी को डिबींकिग कहते हैं ।

मत्स्य पालन

- राजस्थान मत्स्य अधिनियम 1953 में पारित किया गया ।

- उदयपुर में मत्स्य सर्वेक्षण व अनुसंधान केंद्र 1958 में स्थापित किया गया ।

- राजस्थान में स्वतंत्र मत्स्य विभाग की स्थापना 1982 में की गई ।

- बांसवाड़ा में पहली बार संवल प्रजाति की मछली को मोनोकल्चर द्वारा पौंड निर्माण कर पाला जा रहा है ।

◆ उदयपुर के बड़ा तालाब में पहला मत्स्य अभ्यारण्य बनाया है ।

◆ मत्स्य प्रशिक्षण विद्यालय उदयपुर में है ।

◆ मत्स्य पालन केंद्र – बांसवाड़ा, राजसमंद, उदयपुर, हनुमानगढ़ और भरतपुर ।

◆ जलाशयों व पोखरों में मच्छरों की संख्या को नियंत्रण करने हेतु गंबूचिया मछलियाँ छोड़ी जाती है ।

पशु विकास योजनाएँ

(1) मुख्यमंत्री पशुधन निशुल्क दवा योजना – 15 अगस्त 2012

(2) अविका क्रेडिट कार्ड योजना , अविका कवच योजना (2004-05)

(3) एडमास योजना – 1 अप्रैल 1999

(4) कामधेनु (हीफर) की परियोजना – 1997-98

(5) गोपाल योजना – 2 अक्टूबर 1990 (दक्षिण-पूर्वी 10 जिले)

(6) कड़कनाथ योजना – बांसवाड़ा जिले में

राजस्थान के पशु संस्थान

- 13 अप्रैल 2005 को राजस्थान राज्य पशुपालन कल्याण बोर्ड का गठन ।

- **जामड़ोली (जयपुर)** – यहां राजस्थान पशुधन विकास बोर्ड का गठन 25 मार्च 1998 को किया गया । पशु पोषाहार संस्थान की जामडोली में वर्ष 1991 में स्थापना की गई ।

- **जयपुर** – यहां राज्य गौ सेवा आयोग की स्थापना 23 मार्च 1995 को की गई । राजस्थान गौशाला पिंजरपोल संघ स्थित है ।

- **बनीपार्क (जयपुर)** – भारतीय पशुपालन विकास एवं अनुसंधान संस्थान लिमिटेड

- **बनीपार्क (जयपुर)** – भारतीय पशुपालन विकास एवं अनुसंधान संस्थान लिमिटेड

- **दुर्गापुरा (जयपुर)** – राज्य का पहला बायो सीएनजी प्लांट ।

- **हिंगोनिया गौशाला** – जयपुर में स्थित है, यहां गोमूत्र से ऑर्गेनिक फिनाइल बनाया जाएगा ।

- **मोहनगढ़ (जैसलमेर)** – वृहद चारा बीज उत्पादन फार्म ।

- **अकलेरा व डग (झालावाड़)** – अवशीतन केंद्र

- **पाली** – यहां कैटल फीड प्लांट स्थित है ।

- **जोहड़बीड़ (बीकानेर)** – गिद्धों के लिए प्रदेश का पहला कंजर्वेशन रिजर्व क्षेत्र ।

- **अजमेर** – इस संभाग में गो अभ्यारण स्थापित करने जा रहा है । अजमेर में पहला हेरिटेज जीन स्थापित है ।

- **चूरू** – यहां पशुपालन जीन की स्थापना की जाएगी ।

- **अलवर** – यहां राजकीय सूअर फार्म स्थापित है ।

- **पशु आहार संयंत्र** – जोधपुर, लालगढ़ (बीकानेर), नदबई (भरतपुर) व तबीजी (अजमेर), झोटवाड़ा (जयपुर) ।

राजस्थान के पशु मेले

(1) श्री मल्लीनाथ पशु मेला, तिलवाड़ा ,बाड़मेर

(2) श्री बलदेव पशु मेला मेड़ता, नागौर

(3) श्री वीर तेजाजी पशु मेला परबतसर, नागौर

(4) श्री बाबा रामदेव पशु मेला मानासर, नागौर

(5) श्री गोमती सागर पशु मेला झालरापाटन ,झालावाड

(6) श्री चंद्रभागा पशु मेला झालरापाटन, झालावाड

(7) श्री गोगा मेडी पशु मेला गोगामेड़ी, हनुमानगढ़

(8) जसवंत पशु मेला भरतपुर

(9) श्री कार्तिक पशु मेला पुष्कर ,अजमेर

(10) श्री महाशिवरात्रि पशु मेला करौली

भारत सामान्य ज्ञान
महत्वपूर्ण प्रश्नों की सभी पीडीएफ
फ्री डाउनलोड करें
क्लिक करके डाउनलोड करें एवं पढ़ें

राजस्थान सामान्य ज्ञान
वन लाइनर प्रश्न-उत्तर
500+ क्लिक करें एवं पढ़ें

सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए
राजस्थान क्लासेज

- विषयवार ई- बुक यहाँ से देखे
- Youtube पर ऑनलाइन क्लासे देखे
- लेटेस्ट पोस्ट (GK क्विज)
- 1000 प्रश्न ई-बुक Download
- राजस्थान GK ई- बुक डाउनलोड
- Computer E- book Download
- Rajasthan Gk Questions
- India Gk Questions
- One Liner Gk Questions

सामान्य ज्ञान

5100+ प्रश्न

कम्प्यूटर ज्ञान

E-Book

~~149/-~~ - Free Now

लाइव क्लासेज
सभी प्रश्नोत्तरी PDF
Click Here डाउनलोड

राजस्थान GK नोट्स
महत्वपूर्ण- महत्वपूर्ण नोट्स
सम्पूर्ण PDF
Click Here डाउनलोड

राजस्थान GK
LIVE CLASS PDF
DAILY UPDATE

सम्पूर्ण नोट्स PDF
विषयवार ई-बुक
सभी PDF यहां से डाउनलोड करें